औषधीय पौधों से इलाज करने का मजा

– कुमारी दीपिका

हमारे आस–पास जो पौधे हैं उनसे कितने ही रोगों का इलाज संभव है यह जानना कैसा होता है कक्षा 8 की दीपिका से।

हमारे आस पास बहुत सारे उपयोगी औषधीय पौधे हैं। कई रोगों के उपचार में ये रामबाण साबित होते हैं। कुछ पौधे के बारे में समुदाय के लोगों को जानकारी होती है जिसका उपयोग वे पीढ़ी–दर पीढ़ी करते आ रहे हैं। ये जानकार लोग भी अब कम होते जा रहे हैं।

हमारे अध्यापक श्यामलाल भारती जी ने हमें औषधीय पौधों पर प्रोजेक्ट कार्य करवाया। प्रोजेक्ट कार्य में सर ने विद्यालय में अनेक फलदार पौधे, सब्जी, फूल और औषधीय पौधे लगवाये। उनके उपयोग के बारे में बताया तब जाकर मुझे पता लगा कि पौधों का हमारे जीवन में क्या महत्व है। मैंने मन में ठान ली कि हमेशा पौधे लगाती रहूंगी ताकि पर्यावरण व स्वास्थ्य अच्छा रहे।

जिस पौधे के बारे मैं लिख रही हूं उस पौधे का वैज्ञानिक नाम Solanum Nigrum है। यह खेतों की मेंढ़ों एवं किनारों पर पाया जाता है। इसके छोटे–छोटे फूल गुलाबी रंग के होते हैं। यह पौधा मकोय (गिवई) तथा मिर्च की फैमिली का है। यह हमारे गांव एवं आसपास खूब पाया जाता है। यह पौधा कई लाभकारी गुणों से भरपूर है। इसका प्रयोग यदि हमारे शरीर में छोटे–छोटे लाल दाने हो जाते हैं ये दाने धीरे–धीरे हमारे पूरे शरीर पर फैलने लगते हैं। यह रोग पेट की बीमारी से संबंधित है। गढ़वाली भाषा में इसे मकड़ा कहते हैं। इस पौधे की पत्तियों को पीसकर इसका लेप शरीर पर रगड़ने से 2–3 दिन के अन्दर यह बीमारी ठीक हो जाती हैं। इस पौधे का एक और रोग के उपचार में उपयोग किया जाता है। जब किसी व्यक्ति के बदन में छाले (गढ़वाली में फुफरा) पड़ जाते हैं तो Solanum Nigrum की पत्तियों को पीसकर मक्खन के साथ लगाने से यह रोग ठीक हो जाता है। इस पौधे को कश्मीर में 'कांच मांच' के नाम से

जाना जाता है। इसके अलावा हाथों की अंगुलियों के बीच में यदि छाले या खुलजी होती तो Solanum Nigrum की पत्तियों को पीसकर लगाने से ठीक हो जाती है।

अन्त में मैं धन्यवाद देना चाहूंगी अपने शिक्षक भारती सर का एवं उनकी माता का जिन्होंने मुझे अनेक औषधीय पौधों के बारे में बताया, क्योंकि सर इन पौधों से कई लोगों का इलाज कर चुके हैं। इन पौधों के क्या अन्य गुण हैं? भविष्य में जड़ी–बूटी शोध संस्थान जाकर पता करूंगी, ताकि अधिक से अधिक बीमारियां ठीक कर सकूं। पौधों का महत्व हमेशा मेरे मन मस्तिष्क पर छाया रहेगा। मैं इन पौधों के गहन अध्ययन के कारण ही राज्य स्तरीय विज्ञान मेला में प्रतिभाग कर रही हूं।

(कक्षा 8, रा.उ.प्रा.वि. कोटी मदोला, अगस्त्यमुनि, रुद्रप्रयाग)